[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3464

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

राजस्थानी लोक संगीत का समाज पर प्रभाव

डॉ. निशा जैन
प्राध्यापक – समाजशास्त्र,
शास. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा., इन्दौर

भारत के प्रदेशों में राजस्थान अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की मौलिकता के कारण सर्वदा से पर्यटक, संगीतकार, शिल्पकार आदि के लिए कौतूहल का विषय रहा है। राजस्थान की संस्कृति खान–पान, वेशभूषा, नृत्य, संगीत एवं लोक गीतों के लिए प्रत्येक समय में विशिष्ट बनी हुई है। राजस्थान में पल्लवित लोक संस्कृति में क्षेत्रीय रहन–सहन, खान–पान व लोकगीतों का खजाना छिपा हुआ है। यहाँ के रीति–रिवाज रहन–सहन, वेशभूषा, चटकीले रंग, तीज त्यौहार, मेले, पर्व में पहनावा तथा सिर पर साफे बंधे हुए पुरूष एवं घेरदार लहँगे में महिला शहरवासियों के आकर्षण का केन्द्र होती है। राजस्थानी लोक संगीत सभी विशिष्ट अवसरों पर गाए एवं बजाये जाते हैं। राजस्थानी गीतों पर वहीं की रंगीन वेशभूषा में नृत्य नाटिकाएँ दर्शकों का मन मोह लेती हैं।

राजस्थानी लोक संगीत – लोकगीत जनमानस के स्वाभाविक उद्‌बोधनों का नैसर्गिक प्रस्फुटन है। कवि रविन्द्र ने लोक गीतों को संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है। राजस्थानी लोक संगीत उन्मुक्त तथा जीवन की करवटों पर आधारित है। इनमें मानव ह्रदय की प्राकृत भावना निहित है। यहाँ के लोक संगीत में व्यक्तिगत के स्थान पर सामूहिक प्रवृति अधिक व्याप्त है। राजस्थानी लोक संगीत एवं गीत में मानव जीवन के उल्लास, उमंग, करूणा, रूदन एवं सुख–दुख की कहानियां छिपी हुई है। राजस्थानी लोक संगीत का स्वरूप बहुत विस्तृत है। एक तरफ जहाँ लोक गीतों में जीवन के प्रमुख संस्कारों, पर्वोत्सवों, धार्मिक अनुष्ठानों, ऋतुओं, व्यवसायों अथवा आजीविका के साधनों और उनसे उत्पन्न मानसिक व भौतिक प्रतिक्रियाओं का चित्रण हुआ है वहीं दूसरी तरफ पारिवारिक संबंधों का स्वरूप एवं दिशा बोध भी इनमें केंद्रित हुआ है इसके वृहत स्वरूप में समाज के विवाह, आचार–विचार, नीति तथा जीवन दर्शन से संबंधित सामग्री भी निहित है। ये लोक गीत सहजता के कारण सभी जगह स्वीकृत होते हैं।

संस्कार संबंधी लोकगीत एवं संगीत – राजस्थानी लोकगीतों एवं संगीत में जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के संस्कारों की व्याख्या की गई है। ऐसा प्रतीत होता है मानो हमारा सारा जीवन ही लोकसंगीतमय है। राजस्थानी लोक संगीत जीवन के प्रत्येक अवसर के लिए उपलब्ध होते हैं। राजस्थान में अनुष्ठानों की पूर्णता संगीत के बिना अधूरी है।

जौहर एवं शौर्य संबंधी लोकगीत – राजस्थान जिसका इतिहास शौर्य एवं बलिदान की गाथाओं से लिप्त है वह यहाँ के संगीत में स्पष्ट रूप से झलकता है। राजस्थानी गीतों में वहाँ के वीरों के कर्त्तव्य पालन, प्रतीज्ञा पालन, आत्मत्याग, उदारता, सत्यपरायणता, स्वामी भक्ति का वर्णन भी है तो पतियों के लिए सती होने वाली महिलाओं के लिए सती पूजा के गीत भी प्रचलित हैं।

धार्मिक लोकगीत – भारतीय जीवन धर्म से ओतप्रोत है। राजस्थानी लोकगीतों में देवी–देवताओं के अनुष्ठानों एवं विभिन्न धार्मिक पर्वों के लिए भी गीत–संगीत प्रचलित हैं जिससे भक्ति भाव का प्रदर्शन होता है।

त्यौहार एवं पर्व गीत – राजस्थानी संस्कृति पर्वों एवं त्यौहारों की संस्कृति है। वर्षभर विभिन्न त्यौहार जीवन में उत्साह का संचरण करते हैं। गणगौर, तीज, होली, राखी, दिपावली, दशहरा, मकर सक्रांति आदि अवसरों पर गीत–संगीत के द्वारा खुशियाँ मनायी जाती हैं।

मेला संबंधी लोकगीत – राजस्थान में पूरे वर्ष विभिन्न स्थानों पर वहाँ के स्थान के नाम अथवा देवता के नाम पर मेलों का आयोजन किया जाता है जिनमें प्रमुखतः पुष्कर मेला, जीणमाता का मंदिर, भर्तहरि मेला, तेजाजी, महावीर जी, कैला देवी मेला प्रमुख हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

व्यवसायिक जातियों के लोक गीत एवं संस्कृति – राजस्थान में कई जातियों ने गीत संगीत को जीवीकोपार्जन का साधन बनाया हुआ है इस कारण इन्होंने अपनी कला एवं संगीत को परिश्रम से निखारा हुआ है। इनके गीत रचना की दृष्टि से परिष्कृत भावपूर्ण एवं वैविधयमय होते हैं।

विरह गीत – राजस्थान राजपूतों का राज्य है यहाँ युद्ध में राजपूत व्यस्त रहते थे गृहस्वामिनियों की दशा विरहणी सी हो जाती थी अतः लोकगीतों में विरह गीतों का बाहुल्य भी देखा जाता है।

प्रकृति विषयी गीत–संगीत – ऋतु परिवर्तन होने पर मन के उल्लास को अभिव्यक्त करने के लिए, कृषि उत्पादन होने पर एवं विविध पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, मोर आदि के लिए भी सुमधुर गीत–संगीत राजस्थानी संस्कृति में प्रचलित हैं। प्रकृति के साथ हमारे मौलिक संबंधों का रहस्य लोकगीतों के माध्यम से सरलता से समझा जा सकता है।

आधुनिक समाज एवं राजस्थानी लोक संगीत – राजस्थानी लोक संगीत का महत्व न सिर्फ राजस्थान में है वरन् सम्पूर्ण विश्व में राजस्थानी गीत–संगीत एवं कला को सराहा जाता है एवं पसन्द किया जाता है। सम्पूर्ण विश्व में राजस्थानी संगीत अपने मूल स्वरूप में आज भी प्रसिद्ध है। शिक्षित एवं आधुनिक सभ्यता में राजस्थानी गीतों की प्रसिद्धि उनके महत्व को परिलक्षित करती है यही कारण है कि फिल्मों में भी प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक राजस्थानी लोक संगीत एवं संस्कृति का बोलबाला दिखाई देता है। दूरदर्शन के विविध कार्यक्रमों में, शहरों के स्कूलों, कॉलेजों के वार्षिकोत्सव में, शहरों में लगने वाले विभिन्न मेलों में एवं अन्य महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उत्सवों के दौरान राजस्थानी लोकगीतों एवं संगीत को सुनना सभी को अच्छा लगता है एवं इसकी विशेष मांग होती है। राजस्थानी गीत मधुर, कर्णप्रिय एवं मन को उल्लास एवं आनन्द से भरने वाले होते हैं। इन लोकगीतों को शिक्षित, अशिक्षित, आधुनिक एवं आदिवासी सभी समाजजनों के द्वारा पसन्द किया जाता है। इस कला का संरक्षण प्राचीनकाल में राजाओं द्वारा किया गया जबकि वर्तमान में केन्द्र एवं राज्य स्तर पर प्रशासन द्वारा इस कला को धरोहर मानकर संरक्षित एवं विकसित किया जा रहा है। राजस्थानी लोक संगीत कभी भी विलुप्त नहीं हो सकता वरन् इसके स्वरूप में निरंतर और अधिक निखार दिखाई दे रहा है जो वर्तमान समाज की सभी आवश्यकताओं के अनुरूप गाए एवं बजाए जाते हैं।

संदर्भ –

(1) राजस्थानी लोकगीतों की शास्त्रीयता – डॉ. लवली शर्मा, डॉ. ईश्वर सिंह खींची।
(2) राजस्थान संगीत और संगीतकार प्रतापसिंह चौधरी।
(3) राजस्थान का लोक संगीत, शर्मा खुराना।